IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 19 May 2003 (morning)
Lundi 19 mai 2003 (matin)
Lunes 19 de mayo de 2003 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- Ne pas ouvrir cette épreuve avant d'y être autorisé.
- Rédiger un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं (क) तथा (ख) । इन में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए ।

(क)

मोहन को बात करने का सलीका आता है । बोलता है तो एक एक शब्द को तौलकर । उसकी बात मन को बांध लेती है । मामूली कपड़े भी उसके शरीर पर अच्छे लगते हैं । सबसे बड़ी बात है उसकी शलीनता । दूसरों की बढ़ाई करने में मोहन को सुख मिलता है । लेकिन मोहन की बढ़ाई कोई नहीं करता । जो कुछ बोलते भी हैं तो इस बात का आश्चर्य व्यक्त करते हुए कि "अरे, यह हरिजन है, हम तो समझे थे किसी अच्छी जात का लड़का होगा, बात तो बड़े कायदे की करता है ।" मोहन को इसी बात से चिड़ हो जाती कि उसकी तारीफ में भी उसकी जात आ जाती है । ऐसी तारीफ वह सुनना नहीं चाहता ।

मोहन की किसी से तुलना नहीं हो सकती । वह तो रेखा के उस पार खड़ा है यहां उसकी गिनती ही नहीं है । वह एक ऐसे वर्ग का प्राणी है जिस वर्ग की निकटता आज भी कोई स्वर्ण सोच नहीं सकता । हां, मोहन देखने में अच्छा लगता है, उस से बात कर के मन जुड़ा जाता है । इसी से इधर उधर आते जाते अगर मोहन मिल जाता है तो सविता उस से एक दो बातें कर लेती है । आज भी ऐसा ही कुछ हुआ । पर मां का बीच में टांग अड़ाना उसे खल गया । सीधी बात का गलत अर्थ लेती है, न जाने मां ने कौन से संस्कार पाए हैं ।

"तुझ से दस बार कहा कि मोहन से मत बोला कर । तू फिर भी बोलती है ।" मनकी ने गुस्से से कहा ।

"बोलने से क्या हुआ ? क्या छूत लग गई ?" सविता को भी गुस्सा आ गया । बेकार में मां हर समय टोकती रहती है ।

"छूत अब तक नहीं लगी है तो लग जाएगी । नीची जात वाले से हंस हंस कर बात करेगी तो देखने वाले शावासी नहीं देंगे ।"

"तुम्हें भी कसम है जो अब किसी नीची जाति वाले से बात करो । न मोची से चप्पल टकाना, न जमादार से सफाई कराना । अगर मोहन से किसी काम को अब तुमने कहा तो ठीक नहीं होगा । कहे देती हूं ।" सविता भी लड़ने के मूड में आ गई ।

"ली और ली, तेरी अच्छाई-बुराई का ध्यान भी न रखूं ।" मनकी ने हाथ नचाकर कहा । "पता भी है कि मोहन से मुहल्ले में कोई हंसी-दिल्लगी नहीं करता । एक तू ही है जो हंसहंस कर बात करती है । चन्द्रभान भी मोहन से बात नहीं करता ।"

"चन्द्रभान को बीच में क्यों लाती हो ? चन्द्रभान से क्या मतलब ?" सविता की आंखें गुस्से से फैल गई । "चन्द्रभान मुझे पढ़ाने आते हैं । इसके यह माने नहीं कि वह मेरे हंसने-बोलने के भी ठेकेदार हो गये । उनसे भी तुम्हीं ने कहा होगा ।"

"मैं क्यों कहने लगी किसी से । मेरी तरफ से सब भाड़ में जाओ ।" मनकी ने थैला उठाया, चप्पल पहनी और बाहर जाने के लिए तैयार होने लगी । "जब देखो बहस करती है । चभड़-चभड़ बोलना आता है, बस पूछो भला कह दिया तो क्या बुरा किया ? तेरी भलाई के लिए ही कहा और क्या ।" मनकी पैर खटकती हुई बाहर चली गई ।

'सफर-दर-सफर' धर्मेन्द्र गुप्त 1986

- लेखक ने गद्य द्वारा कौन सी सामाजिक बुराई को प्रस्तुत करने का प्रत्यन किया है और वह अपनी बात कहने में कहां तक सफल हुआ है ?

- विषयवस्तु को प्रस्तुत करने के लिए लेखक द्वारा प्रयोग किए गए साधनों के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

- इस गद्य के विषयवस्तु को प्रस्तुत करने के लिए लेखक द्वारा प्रयोग की गई भाषा तथा शैली पर टिप्पणी कीजिए ।

- इस गद्य के विषयवस्तु ने आप पर क्या प्रभाव डाला ?

(ख)

पतझड़ की एक शाख

पतझड़ की एक शाख
पत्तों के झड़ जाने पर
सोच रही थी,
विचर रही थी
आशा और निराशा के घेरे में
क्या मुझ में फिर से
हरियाली आएगी
इस सूखी शाख पर
क्या फिर,
नई कोंपलें फूटेंगी

न जाने ये सोचते सोचते
कब ढल गया वो मास
और छा गया मधुमास,
घन गरजे, बरसी बहु बूंदें
और देखते ही देखते
शाख से फुट पड़ीं नई कोंपलें
पीली शाख फिर से हरिया उठी
और लगी हवा में डोलने
इठलाती, अठखेलियां डालने
कभी गाती गीत
मस्ती में मदमाती,
झूमझूम कर वो
मन ही मन लुभाती

यह जीवन है सुखदुखःमय
यह चक्र सतत है
संघर्ष समर है
घूम रहा यह जीवन प्रतिक्षण
सुखदुखः की चकरी पर हर पल,
सुख आने पर हम इठलाते
दुखः आते ही हम मुरझाते

शाश्वत है यह नियम प्रकृति का
फिर भी हम रोते हंसते हैं
आशा निराशा के बंधन से, फिर
मुक्त कभी न हो पाते हैं
पर क्या कोई याद रखेगा
पतझड़, शाख और
कोंपल का फूटना,
समदर्शी समभावों से फिर
संघर्ष समर की जीत के रहना

कुसुम वीर 'सरिता' जुलाई (द्वितीय) 1996

- कविता में कवियित्री ने क्या कहने का प्रयास किया है और वह अपनी बात कहने में कहां तक सफल हो पाई है ?
- कवियित्री द्वारा पतझड़ की एक शाख की तुलना मानव जीवन के सुख-दुखः से करना कहां तक मान्य है ?
- कविता की भाषा, शैली तथा प्रस्तुतीकरण के बारे में अपने विचार प्रकट करें ।
- इस गद्य के विषयवस्तु ने आप की विचारधारा पर क्या प्रभाव डाला और इस से प्रभावित होकर आप जीवन के बारे में क्या सोचते हैं ?